International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 07-09-2020; Accepted: 22-09-2020; Published: 08-10-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 75-77

भारतीय संस्कृति एव साहित्य में वर्णित अपरिग्रह की वर्तमान में प्रसंगिकता

रेनू सिंह
शोध छात्रा, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
वर्तमान समाज विषमताओं से परिपूर्ण है, विकास का माडल शोषणकारी है इसमें हर स्तर पर एक इकाई द्वारा दूसरी इकाई के शोषण प्रक्रिया को जन्म दिया है न सिर्फ भारत बल्कि दुनिया के अधिकांश देशों में भूख, बीमारी, गरीबी, बेरोजगारी विषमता का एक दुष्चक्र बन गया है। सम्पूर्णविश्व इस बेतुकी असमानता की ओर बढ़ता जा रहा है, घूशखोरी, भ्रष्टाचार, आर्थिक अपराध, काला धन आदि प्रवृत्ति की लगातार वृद्वि आम व्यक्ति की समस्या दुःख दर्द को और और बढ़ा दिया है। उपभोग वृद्वि को विकास का इंजन बताकर विंज्ञापन प्रेरित भोगवादी परिग्रह संचायन जीवन शैली को बढ़ावा दिया जा रहा है इसके अतिरक्त संसार में आतंकवाद, उग्रवाद, अलगाववाद, भोगवाद, अत्याचारकी प्रवृत्तियॉ तेजी से बढ़ती जा रही हैं। अतः वर्तमान में समाज वैज्ञानिकों को वैचारिक दृष्टिकोण से इस समस्या का समाधान व उत्तर तलाशने की आवश्यकता है। वैश्विक स्तर पर बनते बिगड़ते राजनीतिक, आर्थिक ध्रुवीकरण विभिन्न देशों के साथ सीमा विवाद, जल विवाद, प्राकृतिक संसाधनों से उपजे विवाद कमजोर होती कानून व्यवस्था, अराजकता, अस्थिरता आदि अधिक चिन्ता का कारण ळें वैश्विक परिदृश्य के साथ–साथ हमे भारत के परिदृश्य को भी भलीभॉति समझना व परखना होगा।

मूलशब्दः भारतीय संस्कृति, अपरिग्रह, पुरूषार्थ, परिग्रह, संग्रह आदि

प्रस्तावना
विकास के माडल ने नैतिक सांस्कृतिक एवं मानवीय मूल्यों में गिरावट एवं पारिवारिक एवं सामुदायिक जीवन को बेकार बना दिया है मानवीय सम्बन्ध दूषित होते जा रहे हैं। अधिक से अधिक चल–अचल सम्पत्ति अर्जन की प्रवृत्ति, सबसे उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने व आर्थिक दृष्टि से मजबूत बनने की होढ़ में मानव अपनी मानवता खोता जा रहा है। धन अर्जन व संचयन करने हेतु वह अनैतिक कार्य करने से नहीं हिचक रहा है। देखा जाए तो वर्तमान वैश्विक परिदृश्य अनेक विरोधाभासों व विषमताओं का पिटारा बन गया है। यातायात एवं संचार क्रान्ति ने समूचे विश्व की दूरी को कम कर वैश्विक ग्राम में बदल दिया है।आज मनुष्य अन्तरिक्ष पर भी जाने लगा है, किन्तु इन सब के बीच मनुष्य–मनुष्य में दुरियॉ बढ़ रही है मन का सन्ताप व तनाव बढ़ रहा है। मन की शान्ति व आनन्द विलुप्त हो रहा है। विभिन्न दर्शन व सिद्धान्त नीतियों की आधार भूमि खिसकती जा रही है।
भारतीय संस्कृति व साहित्य में भारतीय चिन्तन परम्परा प्रारम्भ से ही भौतिक और अध्यात्मिक आयामों का समायोजन करती आई है। पुरूषार्थ चतुष्टय, अपरिग्रह विश्व बन्धुत्व, समन्वयता आदि की संकल्पना भौतिक समृद्धि और अध्यात्मिक उन्नत के मध्य सन्तुलन समन्वय बनाने हेतु की गयी थी। उपर्युक्त समस्याओं हेतु व्यक्ति एवं समाज में व्याप्त विषमताओं को दूर करने हेतु आज जिसकी अत्यधिक आवश्यकता है वह ''अपरिग्रह का सिद्धांत'' मनुष्य की इच्छाएँ असीम व अनन्त हैं जिनकी पूर्ति के लिए व अन्याय अत्याचार, धोखधड़ी आदि अनुचित साधनों का प्रयोग करता है। वर्तमान समय में हर प्रकार के अनुचित कृत्यों व भ्रष्टाचार को रोकने में अपरिग्रह कर सिद्धांत या नीति एक अमोघ शस्त्र साबित हो सकता है।

अपरिग्रहः– परिग्रह (संचय) न करना इसे अनाशक्ति भी कहते हैं, अर्थात् किसी भी प्रकार की चल–अचल सम्पत्ति या वस्तु का संग्रह न करना अपरिग्रह कहलाता है।
वर्तमान में समाजवाद तब तक सार्थक नहीं होगा जब तक आर्थिक विषमता व्यप्त रहेगी। एक ओर अत्याधिक पैसा दूसरी तरफ पैसे का अभाव। इस विषामता को भारतीय साहित्य में वर्णित अपरिग्रह के सिद्धान्त द्वारा ही भरा जा सकता है। अपरिग्रह कम साधनों में अधिक संतुष्टि पर बल देता है। यह आवश्यकता से अधिक रखने की मनाही करता है। अपरिग्रह लोग लालच से परे गैर आधिकारिक भावना और गैर लोभ की अवधारण है। जो अधिकारात्मकता से मुक्त होता है या धन सम्पत्ति संचित न करने पर बल देता है।
अपरिग्रह का अर्थ है किसी भी विचार व्यक्ति या वस्तु के प्रति आसक्ति न रखना जो व्यक्ति निरपेक्ष भाव से जीता है व शरीर मन और मस्तिष्क के आधे से ज्यादा समस्याओं को दूर भगा देता है। जो व्यक्ति किसी से मोह आसक्ति रखता है तो मोह रखने की आदत के कारण यह मोह चिन्ता में बदल जाता है और चिन्ता से कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं। कुछ लोगों में संग्रह करने की प्रवृत्ति होती है जिससे मन में व्यर्थ की बातें संग्रहित होती हैं जो मन में संकुचन पैदा करने लगती हैं। अतः मन वचन, और कर्म से संग्रह करने की प्रवृत्ति को त्यागना ही ''अपरिग्रह'' है।
भारतीय संस्कृति एवं साहित्य में नैतिक मूल्यों में पालन की आवश्यकता सम्बन्धी निर्देश भरे पड़े हैं आपसी समन्वय सहयोग एवं सौहार्द की संकल्पना प्राचीन काल से ही भारतीय दर्शन में व्याप्त रहा है। जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन तथा पतंजलि के योग दर्शन के प्रथम अंग यम के पांचवें उपांग में अपरिग्रह के महत्व वर्णित है। समय–समय पर स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गॉधी आदिमहापुरूषों ने इस नैतिक मूल्य को तरोताजा किया तथा स्वयं भी इन आदर्शों का अनुपालन किया विवेकानन्द आदर्श आज भी मानव जीवन को प्रेरित करते हैं।
भारतीय सभ्यता व संस्कृति और स्वराज आवश्यकताओं को बढ़ाने विषयासक्ति पर नहीं, अपितु आत्म त्याग पर निर्भर है। अपरिग्रह अस्तेय के साथ जुड़ा है। यदि हम कोई भी वस्तु आवश्यकता से अधिक रखते हैं। तो वह चोरी की श्रेणी में ही गिनी जाएगी भले ही मूलतः वह चुराई गयी वस्तु न हो। ''परिग्रह'' का अर्थ होता है भविष्य के लिए व्यवस्था करना। जो अपरिग्रह की मुख्य समस्या है। यदि प्रत्येक व्यक्ति सिर्फ उतना रखे जितनी उसे जरूरत है। तो कोई अभाव ग्रस्त नहीं रहेगा। और सब सन्तोषपूर्ण जीवन

जियेंगे। क्योंकि प्रकृति स्वयं उतना उत्पादन करती है जितना सृष्टि के लिए आवश्यक है। इसलिए हमें आवश्यकता से अधिक संग्रह करके नहीं रखना चाहिए। धन दौलत जमीन जायदाद ऐश्वर्य आदि भौतिक पदार्थों की लालसा के कुचक्र में फसा हुआ मनुष्य यह सोचता है कि मै ही सम्पूर्ण सम्पत्तियों का स्वामी बन जाऊ। जो मनुष्य को न्याय अन्याय, धर्म–अधर्म, पुन्य–पाप यश–अपयश के विचारों में शून्य होकर रात–दिन मोह–माया के जाल में फस कर आत्मशान्ति को समूल नष्ट कर डालता है। मन चाहा साम्राज्य के प्राप्ति के लिए दूसरों से बेईमानी, लूट, अन्याय, अत्याचार और आक्रामक व्यवहार करता है। अतः परिग्रह रूपी इस जाल में अपरिग्रह के माध्यम से शीघ्र निकल जाना चाहिए। अपरिग्रह ही भावना ही सच्चा साम्यवाद या समाजवाद है। अतः अपने पास उतना ही धन–वस्तु रखना चाहिए जितने की आवश्यकता हो। आवश्यकता से अधिक संग्रह करना मनुष्य को लोभी बनाता है। ऐसा होने पर मनुष्य के मन में अनेक विकार उत्पन्न हो जाते हैं। कहते हैं इच्छाएँ कभी नहीं मरती उदाहरण के लिए व्यक्ति के पास जितना है उससे अधिक की आकांक्षा करता है। लखपति व्यक्ति करोड़ पति अरब पति बनने के लिए परेशान रहता है। उनकी इच्छा पूर्ति हेतु व छटपटाता रहता है। यही छटपटाहट ही अनियमितताओं का कारण होता है व्यक्ति लोभ, हिंसा, झूठ, चोरी आदि अनैतिक कार्य का सहारा लेता है। इन बुरी एवं व्याभिचारी कृत्यों एवं आतदों से बचने के लिये अपरिग्रह का पालन वर्तमान में अत्यन्त उपयोगी एवं प्रासंगिक है। महात्मा गॉधी ने भी मानव समाज हेतु नीति दर्शन व विचार प्रस्तुत किये जो आधुनिक भारत के साथ–साथ समस्त विश्व के लिए अनुकरणीय एवं अनुपालनीय है। गॉधी जीने अपने विचारों में अपरिग्रह की महत्ता को व्याख्यित किया आर्थिक अन्याय और अराजकता एवं असमानता को दूर करने लिये गॉधी जी ने जीवन में अपरिग्रह को अपनाने की बात पर बल दिया। उनका मानना है कि हमे उन वस्तुओं का संग्रह नहीं करना चाहिए जिनकी हमें भविष्य में आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता भर के लिए प्राप्त करें, अनावश्यक संग्रह न करें। प्रकृति स्वयं इतना उत्पादन करती है जितना सृष्टि के लिए आवश्यक है, इसलिए वितरण का प्राकृतिक नियम यही है कि कोई भी व्यक्ति आवाश्यता से अधिक संचित न करे। महात्मा गॉधी मानवीय इच्छाओं की अत्यधिक वृद्धि से चिन्तित भी थे, क्योंकि ''धरती पर जो भी संसाधन उपलब्ध है आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त है, इच्छाओं के लिए नहीं'' इच्छा व लोभवश संग्रह या परिग्रह, समाज में विषमता को जन्म देता है, अमीर और गरीब और गरीब होता जाता है। इस आर्थिक विषमता के निवारण हेतु वह अपरिग्रह रूपी उपाय सुझाते हैं। उनके अनुसार धनी व्यक्ति को आवश्यकता से अधिक संग्रह करना त्याग देना चाहिए वह सादगी और सन्तोषपूर्ण जीवन को आदर्श समझते हैं।''

वर्तमान में प्रासंगिकता

- वर्तमान में गॉधी के अपरिग्रह का सिद्धान्त नैतिकता को बनाए रखने के लिए रखने के लिए बहुत ही आवश्यक है। आज समाज में विभिन्न प्रकार की विकृतियॉ जन्म ले रही है उसके पीछे अपरिग्रह की भावना का अभाव ही है। गॉधी जी की यह धारणा साम्यवादी आर्दश से मिलती–जुलती है, कि व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार काम करना चाहिए और आवश्कतानुसार ही उपयोग करना चाहिए। गॉधी जी ने नैतिक उत्थान तथा समाज को सही दिशा में लाने के लिए सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह अस्तेय, सर्वधर्म समभाव आदि एकादश व्रत को आवश्यक माना है। उनका नीति दर्शन भारत के लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए उपयोगी एवं प्रसंगिक है।
- वर्तमान में एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र से, एक राज्य का दूसरे राज्य से, एक समाज का दूसरे समाज से, एक परिवार का दूसरे परिवार से, यहॉ तक कि एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से आपसी मतभेद, विरोध, संघर्ष, मनमुटाव, टकराव पनप रहा है इसे भारतीय साहित्य में वर्णित समन्वयवादी विचार एवं अपरिग्रह की नीति द्वारा रोका जा सकता है। वर्तमान में जीवन की आपाधापी और हर प्रकार के भ्रष्टाचार को रोकने के लिए अपरिग्रह की नीति की सबसे अधिक आवश्यकता है।
- आज हमारे देश की युग पीढ़ी पश्चिमी संस्कृति एवं भौतिकतावाद के पीछे दौड़ रही है। आज की युवा पीढ़ी भौतिक ऐश्वर्य पूर्ण जीवन को जीवन का मूल समझ रही और इसकी प्राप्ति हेतु वह अनैतिक कार्य एवं अनाचरण भी ग्रहण कर रहे हैं। भटकती हुई युवा पीढ़ी तथा आने वाली पीढ़ी के दिशा–निर्दशन हेतु और पुरानी भौतिकवादी अवधारतणाओं को संशोधित करने में अपरिग्रह का सिद्धान्त सहायक होगा। यह आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्य पर आधारित है।
- अपरिग्रह के मूल एवं महत्व द्वारा विद्यार्थियों को आने वाली पीढ़ी को भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी दूसरे की वस्तु को रख लेना आदि बुराइयों से दूर रखा जा सकता है। अपरिग्रह संग्रह न करने, भौतिकता के स्थान पर अध्याात्मिकता पर बल देता है। जिससे अनावश्यक फिजूल खर्चे से भी बचा जा सकता है, इससे देश की आर्थिक सहायता में भी हो सकती है।
- वर्तमान समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता, नैतिक मूल्यों के हास, असमनता,अराजकता, चोरी डकैती, भ्रष्टाचार जल संकट, बेईमानी, धोखाधड़ी प्रदूषण, वर्गसंघर्ष आदि बुराइयों व समस्याओं को सुलझाने में प्रत्येक क्षेत्र में नैतिक मूल्यों एवं अपरिग्रह की नीति को लागू करने की आवश्यकता है। यह नीति दर्शन हमारे समाज, देश व सम्पूर्ण मानव समाज को सही दिशा व आधार प्रदान करेंगे।
- योग के प्रथम अंग यम के पॉचवे उपांग में अपरिग्रह की महत्ता वार्णित है जो वर्तमान में अधिक प्रसंगिक है। अपरिग्रह को साधने से व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार आ जाता है साथ ही वह शारीरिक व मानसिक रोग से स्वतः ही छूट जाता है। परिग्रह की भावना रखने वाला मनुष्य अरबपति हो जाए तब भी वह सन्तोष व आनन्द पूर्ण जीवन व्यतीत नहीं कर पाता उसे अन्य की आसक्ति लगी रहती है, किन्तु अपरिग्रह की भावना रखने वालों को किसी प्रकार का सन्ताप नहीं सताता और उसे संसार और जीवन एक सफर की तरह सुहाना लगता है, यदि व्यक्ति में अपरिग्रह का भाव है तो यह मृत्यु काल में शरीर के कष्टों से बचा लेता है, क्योंकि किसी भी विचार और वस्तु की संग्रह करने की प्रवृत्ति त्यागने से शरीर व मन का संकुचन हट जाता है इसके मान व शरीर स्वतंत्र और शान्त महसूह करता है। वर्तमान की भौतिकवादी संसार में सम्पूर्ण वैभव होते हुए भी व्यक्ति को शान्ति एवं सन्तोषपूर्ण नींद नहीं आती वह तनावग्रस्त, अकेलापन आदि रोगों से ग्रस्त हो जाता है। इन सब समस्याओं का निरावरण अपरिग्रह त्याग समन्वय की भावना में छिपा है। अतः अपरिग्रह वर्तमान समाज में महत्वपूर्ण एवं प्रसंगिक है।

अपरिग्रहस्थैर्ये जन्म कथान्ता सम्बोधः।।

''यह सूक्ति कहती है जब हम संचय नहीं करते तो हमे पिछले जन्मों का भी ज्ञान मिलने लगता है। हमारे भीतर के संवाद में स्पष्टता आती है।''

- अपरिग्रह संचय न करने का सीधा अर्थ है अपने सामर्थ्य पर विश्वास होना एवं स्वयं के स्वरूप का ज्ञान। जैसे हमे रोटी बनाना आता है तो हम सात दिन के लिए रोटी इकट्ठा बना कर नहीं रखते वह खराब हो जायेगी उसी प्रकार हमें आवश्यकता अनुसार उपयोग करना चाहिए यह अपरिग्रह सीखाता है।
- अपरिग्रह द्वारा आवश्यकता से अधिक वाहनों के रखने को गलत बताकर पेट्रोल, डीजल की बचत भी की जा सकती है।
- वर्तमान में सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त विषमता व अनैतिकता को दूर कर, समाज में उचित एवं प्रभावशाली परिवर्तन कर एक आदर्शवादी व्यवस्था का निर्माण करने के लिए अपरिग्रह नामक अमोघशस्त्र का प्रयोग करना चाहिए। समाजवाद की स्थापना एवं सार्थकता के लिए अपरिग्रह महत्वपूर्ण एवं प्रसंगिक है।

निष्कर्ष

मैं ऐसे समाज के निर्माण की बात नहीं कर रही कि कोई व्यक्ति गरीब नहीं होगा और न ही ऐसे अपरिग्रह की, कि व्यक्ति अपना सर्वस्व त्याग दें, लेकिन मैं ऐसे समाज के निर्माण में अपरिग्रह को प्रसंगिक एवं महत्वूर्ण बता रही हूँ। जब अमीर (धनवान) व्यक्ति गरीबों की कीमत पर धनवान बनने का विचार त्याग दें, सम्पूर्ण संसार में कहीं भी असमानता से पूरी तरह नहीं बचा जा सकता, पर हम संघर्ष अनैतिकता और कटुता अवश्य बच सकते हैं और एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं।

भारतीय साहित्य एवं चिंतन में मानव जीवन के विभिन्न पक्षों के सम्बन्ध में जो व्यवस्थाएँ व दिशा–निर्देश दिए गए हैं, उनमें प्रकृति के साथ सहअस्तित्व, सामंजस्य, त्याग, परोपकार सौहार्द का विधान मिलता है। इस समग्र चिंतन के आधार पर भारतीय मनीषियों ने जिस संरचना का विकास किया था वर्तमान में उसे पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता है। भरतीय चिंतन ने विभिन्न समस्याओं का समाधान मानवीय, नैतिक, अध्यात्मिक जीवन दृष्टि के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसमें माना गया है कि कोई समस्या एकांगी नहीं होती, इसके अनेक पहलू होते है। अतः समाधान भी अन्तर्निभर होंगे और इसलिए हमें अन्तर्शास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाना होगा।

वर्तमान में आवश्यकता है भारतीय साहित्य में स्थापित उच्चादर्शों, मूल्यों को समकालीन समस्याओं एवं चुनौतियों के सन्दर्भ में रखकर देखा जाए एवं वैश्विक दृष्टि सम्पन्न मानवीय मूल्यों को आत्मसात करते हुए, उन आदर्शों मूल्यों को स्थापित किया जाए। जो भौतिकवादी आदर्शों से उत्पन्न अन्तर्विरोधों एवं उपभोक्ता केन्द्रित बाजारवादी व्यवस्था के चंगुल से सम्पूर्ण मानवता को बचाया जाए। और समाज में व्याप्त विषमता को कम किया जाए।

सन्दर्भ सूची

1. हेमचन्द्रः 'द्वाश्रयकाव्य'।
2. सोमेश्वरकृतः 'कीर्तिकौमुदी'
3. जयसिंहसूरिः 'कुमारभूपालचरित
4. महप्रभा, साध्वीः अभिव्यक्ति, मनीषा मीडिया, 2005
5. Pragya, Samani Smit: Journy into Jainism, Health Hrmony, 2010
6. Gelra, Mahaveer Raj: Jainism in 13 Chapters, CreatespaceIndependent, 2017
7. Gandhi, Mahatma: Autobigraphy, Fingerprint Publishing, 2009
8. Gandhi, Mahatma: My Experiments With Truth, Maple Press, 2011
9. Guha, Ramchandra: Gandhi the Years that Changed the Words, Penguin Allen Lane, 2018